CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ त्याज्या न भव्येन : स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा । ओं
ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः ॥ उत्तम
मधमद्दव्य अज्जसच्चउ ॥ पुणसउच्च संयमद्द
अज्जसच्चउ ॥ पुसो। रा सऊच्च संयमस्त् तउ ॥
चउ । विआकिंचन भव भय वंचनु बंभचेर धम्म
जि अक्खउ ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा ॥१॥ मार्दव ॥१॥
आर्जव ॥१॥ सत्य ॥१॥ शौच ॥१॥ संयम ॥१॥ सुतप ॥
१॥ त्याग ॥१॥ आकिंचन्य ॥१॥ ब्रह्मचर्य ॥ अर्थ ॥
इसभांत दस लाक्षनक न्यारे न्यारे ॥ अपने दसल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री जिनाय नमः ॥ मूल ॥ येन केनापि दुष्टेन पीडिते नापि कुत्रचित् ॥ क्षमा त्याज्या न भव्येनः स्वर्गमोक्षाभिलाषिणा ॥ अर्थ ॥ जो काहु दुष्ट कर पीडित हुवो संतो स्वर्ग मोक्ष को वांछिक भव्य जीव कर क्षमा है सो नहीं छोड़ना योग्य है ॥ मूल ॥ ओं ह्रीं परब्रह्मणो उत्तिम क्षमा धर्मांगाय नमः ॥ अर्थ ॥ ऐसे नमस्कार उत्तम क्षमा धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ उत्तम मध्ये येन केनापि दुष्टेन पीडिते नापि कुत्रचित् ॥ क्षमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ गइ दुहाइ ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा है सो गुणां समूह
की सहकारी है ॥ उत्तम क्षमा के समीप गुणां के स
मूह आय रहत है ॥ मूल ॥ उत्तम खम बुह यणि
चिंता मणि ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा है सो पंडित पु
रुषों को चिन्ता मन रत्न है ॥ मूल ॥ उत्तम खम सं
पज्जइ थिर मन ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा है सो मन
थिर होय है ॥ मूल ॥ उत्तम खम मह णिज्ज सय
ल जन ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा है सो सर्व सज्जन
समूह कर पूजनीक है ॥ मूल ॥ उत्तम खम मद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ क्षमा को धरे ॥ इस प्रकार धर्म है ॥ सो संसार
को नाश करन हार है ॥ और सदा शास्वत है ॥
इस दस प्रकार धर्म विषे प्रथम क्षमारूप पर
म धर्म को लक्षण वा फल वा स्तवन वरनि कौ
जे है ॥ मूल ॥ उत्तम खयति ल्लो यहु सारो ॥ अर्थ ॥
उत्तम क्षमा धर्म है सो तीन लोक विषे सार है
॥ मूल ॥ उत्तम खमजंज्जं जम्मं बुहि तारो ॥ अ
र्थ ॥ पोर उत्तम क्षमा धर्म है सो संसार समुद्र
को उतार है पार करै है ॥ मूल ॥ उत्तम खिंबदु म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ हिये॥मूल॥ जहां असमर्थहिं नउ हसिज्जइ ॥अर्थ॥ जहं असमर्थ गरीब अपने आधीन जीव सेती हंसिये नहीं॥मूल॥ सोउ जहीं आको सउ वाहिन सहिज्जइ॥अर्थ॥ जहां आक्रोश वचन दुर्वचन खोटे वचन सहिये॥ जिहि पर दो सगुजणु भासिज्जई॥अर्थ॥ जहां निज आत्मीक दर्शन ज्ञान चेतना के चिंतन विषे मन धरिये॥मूल॥ तहिं उत्तम जनेन कहिज्जइ॥अर्थ॥ तहां उत्तम क्षमा जनेश्वर देवन कर कहिये है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तमहां मारो॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा सो मिथ्या
त्व अंधकार दूर करवे को महां उदोत मान मरी
समान है॥ जिस उत्तम क्षमा को ऐसो बड़ाई है मु
नि महिमा करत हैं॥ सो उत्तम क्षमा कैसे उपजे
है॥ शिष्य ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर श्रीगुरु
महाराज आगे कहे हैं॥ मूल॥ जिस असमर्थ
है दोस खिमि जई॥ अर्थ॥ जहां असमर्थ
जीवों सेती कोई दोष तक सीर भई ताको क्षमा
कीजे॥ सांत परनाम राखिये सो उत्तम क्षमा क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरीत अनंता ऋषि प्रधान ऋषीश्वर जीश्वर
हैं ते सिद्ध पदको प्राप्त होइते ॥ मूल ॥ श्लोक ॥
मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्यं जीवे न सर्वदा ॥ का
ठिण्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुधि विजानता
॥१॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे उत्तम मार्द्दव धर्मांगा
यनमः ॥ अर्घ ॥ धर्म बुद्धि के जाननहारे भव्य
जीव कर सर्व जीवा विषय कोमल परनाम
है सो सर्व काल करने योग्य है ॥ और कठोर
परनाम है सो नित्यही छोड़ने योग्य है ऐसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ पत्तामूल ॥ इअ उत्तमखमजुय नरसुयरवग
गुय केवल नानु लैहे विथिरु ॥ अर्थ ॥ इस भांत
उत्तम क्षमाकर संयुक्त पुरुष है ॥ सो मनुष्य देव
विद्या धरो कर स्तवनी यहु ॥ उसंतो थिरो भ
त केवलज्ञान है ताहि प्राप्त होइ ॥ मूल ॥ करः
हुइ सिद्ध निरंजनः भव दुह भंजनः अगणेथीरे
सेपुंग मझि चिरु ॥ अर्थ ॥ संसार दुःख को नास
करणा समर्थ कर्म कलंक कर रहित सिद्ध महरा
ज होइ है ॥ और सही उत्तमा गुन के प्रभाव कर भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५

गुन गन सारउ॥ अर्थ॥ गुणां के जे समूह तिन विषे सारहै॥ मूल॥ तिस हूवउ संयम सुसहलु॥ अर्थ॥ तिस मार्दव धर्मकर सहित व्रत और संयम हैं ते सफल है॥ मूल॥ मद्दव माणा कसाय विहंडनु॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म है सो मान कषाय को विशेष कर खंडन वाला है॥ पांचौ इंद्री और मन वसहोय है॥ मूल॥ माद्दव धर्म हि करुणा वल्ली॥ पसरइ चित महीहि नव वल्ली मार्दव धर्मकर चित्त रूपी पृथ्वी विषै करुना मई नवीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महान मार्दवरूप अंगहै ताके निमित्त हमारो धर्म
नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ मार्द्दव भव मद्द नु
॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार को मर्दन वा
लो है ॥ नास करने वालो है ॥ मूल ॥ मारा रोकं
दरगु ॥ अर्थ ॥ मान कषाय को अतिसय करना
श करने को समर्थ है ॥ मूल ॥ दया धम्म मुल जि
विमलु ॥ अर्थ ॥ दयामूल को धर्म है और
विमल कहिये निर्मल है ॥ मूल ॥ सव्व हं हिय
पारउ ॥ अर्थ ॥ सर्व जीवो को हित कारी है ॥ मूल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६

रोहइई॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म कर मनुष्य समू
हको वैर भाव है सो दूर होइ है॥ मूल॥ मार्द्दवे
रा परिणाम विशुद्दी॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म क
र परणामों की विशुद्धता होइ है॥ क्रोध मा
न माया लोभ रूप कषाइ है ते मंद होइ हैं॥ इ
सुकेः होहिं हैं॥ जुह भावार्थ है॥ मूल॥ माद्
वेण विहुलोयहु सिद्धी॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म
कर दोउ लोक सें भव सुधो है॥ इस भव अ
रु पर भव में मनो वांछित फल होइ है॥ मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेलहैसो पेड़हैं फलहै॥ मूल॥ मार्दव जि
नवर भतियया सई॥ अर्थ॥ मार्दव धर्महै
सो श्री जिनवर देवकी भक्ति को प्रकाशक
रे है वड़ावेहै दृढ़ावेहै॥ मूल॥ मार्दव कुम
इ पे सरु णरगा सप॥ अर्थ॥ मार्दव धर्मकर
कुमतके विस्तारको अतिशयकरनामुको
यहै॥ मूल॥ माद्दवेरा बहु विण उप बढ्इ
॥ अर्थ॥ मार्द्दव धर्म कर बहुत विनयकर
प्रवर्त्ति होयहै॥ मूल॥ माद्दवेन जनवैइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौ स्वरूप है सो प्रतिभासै है जानिये है ॥ [illegible] ॥ मा
द्दव दोष असेस निवारण ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है
सो सब धर्म को दूर करै है ॥ मूल ॥ मद्दव जनम स
मुद्दो तारउ ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार समुद्र
को पार करै है ॥ पूजामूल ॥ सम्म दंसनु अंगु मद्द
व परनामु जि मुणहु ॥ अर्थ ॥ भो भव्य जीव हो तु
म जो हो ते मार्दव धर्म रूप परनाम है ताहि सम्य
ग्दर्शन को अंग जानो ॥ मूलं ॥ इय परराग्र विचि
ती ॥ अर्थ ॥ इस भांति पूर्वोक्त अतिशय वान मार्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माद्दवेणदो बहुत्तउ मोहई ॥ अर्थ ॥ मार्दवध
र्म कर सहित बाह्यभ्यांतर दोइ प्रकार तप है
सो सोभे है ॥ मूल ॥ माद्दवेण तिजगु जिन-
इ मोहइ ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म कर तीन जगत के
जीव हैं ते अतिशय कर मोहे हैं प्रीति करे हैं ॥
मूल ॥ माद्दव जिनसासनु जानिज्जइ ॥ अर्थ ॥
मार्दव धर्म कर जिन धर्म जिन मत है सो
जानो जाइहै ॥ मूल ॥ अप्पां परिसरु भासि
ज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर मार्दव धर्म वा आपु को औ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है सो न कर्त्तव्या नहीं करनो ॥ मूल ॥ ॐ ह्रीं परम भ
भरो उत्तिम आर्यव धर्मांगाय नमः ॥ अर्थ ॥
ऐसे महान आर्यव धर्मरूप अंग के निमित्त
हमारो नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ धम्मडु
वरलरकणु अजव थिरु मनु ॥ अर्थ ॥ आर्ज
व धर्म है सो धर्म को श्रेष्ट लक्षण है ॥ और
आर्यव धर्म कर मन है सो थिर होइ है ॥ मूल ॥
दुरिय विहंमणु सुहजणणु ॥ अर्थ ॥ फेर आ
र्जव धर्म है सो पाप को नास करन वालो है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व धर्म को स्वरूप वा फल है ताहि अपने विषे जा
नकर॥ मूल॥ मद्दव धम्म अमल्ल थुणहु॥
अर्थ॥ निर्मल मार्दव धर्म है ताहि स्तुति करो॥
मूल॥ आर्यत्वं क्रियते सम्यग्दृष्टबुद्धि च्याति
ज्यते॥ पापचिन्ता न कर्तव्या श्रावक धर्म चिं
तकै॥ अर्थ॥ धर्म चिंतकैः श्रावकैः॥ कहिये
धर्म के चिंतक श्रावक हैं तिनकर आर्यत्वं कहि
ये है करिये है॥ दुष्टबुद्धि त्यज कहिये॥ फेरि दु
ष्टबुद्धि है सो सम्यक् त्यजते कहिये पाप चिंता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९

पने चित्त विषैं चिंतिये ॥ मूल ॥ तारिसु अन्नह पुनु भासिज्जइ ॥ अर्थ ॥ जैसो अपने चित्त विषैं चिंतिये ॥ मूल ॥ तारिस अण्णह पुणु सासिज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर तैसो ही औरों को कहिये ॥ मूल किज्जई पुणु तारिसु ह संचणु ॥ अर्थ ॥ फेर जैसो ही कहिये तैसो ही शुभ पुराय को संचय कीजिये ॥ मूल ॥ तं अज्जउ गुणु मुनहु अवंचनु ॥ अर्थ ॥ भो भव्य हो तुम तें हीं आर्यव धर्म जानो कैसे कहि वे ॥ आर्जव धर्म अवंचन कहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और सुख को उपजावे है ॥ मूल ॥ तंन मुजि किज
इ ॥ अर्थ ॥ सो आर्जव धर्म इस प्रकार कीजें ॥ मू
ल ॥ तंपा ल्लि ज्जइति ॥ अर्थ ॥ सम्आर्जव धर्म
को पालिये ॥ मूल ॥ तब्भस्न ज्झइ ॥ अर्थ ॥ फेर
आर्जव धर्म है ताहि स्नू नियें ॥ मूल ॥ स्वय जरा
रा ॥ अर्थ ॥ तातें संसार को नासु होइ ॥ अथवा रे
सो अर्थ कीजें कैसो कहे ॥ आर्यव धर्म नास करो
हो ॥ संसार जा धर्म कर ऐसो है ॥ आर्यव धर्म ॥ मूल ॥
जारिसुराय विचिंत्त चिंतजइ ॥ अर्थ ॥ जैसें अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० फलरहित है॥ अर्थ॥ अज्जव शिवपुर पंथहु सच्चु हु॥ अर्थ॥ आर्जव धर्म है सो मोक्ष धर्म कौ साधक है॥ जिस आर्जव धर्म की बड़ाइ ऐसी करी सो आर्जव धर्म कैसे उपजे है॥ शिष्य ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर श्रीगुरु कहे हैं॥ मूल॥ जिंह कुडिल परणाम चईज्जई॥ अर्थ॥ जहां कुटिल परनाम छोड़िये॥ मूल॥ तह अज्जव धम्मु जिंसं पज्जई॥ अर्थ॥ तहां आर्जव धर्म है सो उपजे है॥ मूल॥ दंसण णाण संरुव अखंडो॥ अर्थ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये माया कषाय कर रहित है। दगाबाजी ठ
गई कर रहित है॥ मूल॥ माया मनहु नो नीसा
रहु॥ अर्थ॥ माया कुटिलाई रूप शल्य है
ताहि अपने मनतें निकासो दूर करो॥ मूल
अजउ धम्मु चित्त बियारहु॥ अर्थ॥ कुटि
लाई रहित पवित्र आर्यव धर्म है ताहि वि
चारो॥ चिन्त बनओ॥ मूल॥ वउतउ मा
या विय कुणकरं॥ अर्थ॥ व्रत और तप हैं
सो माया चारी दगाबाज पुरुष के निर्थक है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, [illegible] Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ धम्मु इंलब्भइ ॥ अर्थ ॥ सोभी सुद्ध आत्मी
क परनाम आर्जव धर्म के प्रताप कर पाइये है
॥ मूल ॥ अज्जवेरा वइरिय मण खुम्भइ ॥
अर्थ ॥ आर्जव धर्म कर वैरी को मन छोभ को प्रा
प्त है सो होइ है ॥ वैर भाव कर रहित होय है ॥ घत्ता
मूल ॥ अज्ज उ परम प्पु उगय संकप्पउ ॥ अर्थ
आर्जव है सो परमात्मा है ॥ और दूर भए हैं सं
कल्प विकल्प जाल सरूप भाव जाते ऐसा है ॥
मूल ॥ विमुति जिसासंउ अभउ ॥ अर्थ ॥ फेर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो दर्शन ज्ञान स्वरूप है और खंड रहित है ॥ मू
ल ॥ परम अतिंद्रिय सुख करंडो ॥ अर्थ ॥ जो
उत्कृष्ट अतिंद्रिय निज आत्मीय सुख को क
रे है करंडो कहा पिटारो है ॥ मूल ॥ अप्पई
आपडु भावत्तरंडो ॥ अर्थ ॥ जो आप कर आ
प ही संसार समुद्र को तारे है ॥ मूल ॥ एरि सूच
यन भाव भयं हो ॥ अर्थ ॥ ऐसो जो आत्मा को
प्रचंड, प्रबल कषाय रहित सुद्ध निज दर्शन
ज्ञान सरूप परनाम है ॥ मूल ॥ सो परा अज्झव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ भव्य जीवहैं ताकर असत्य कहिये॥ असत्य
वचन है सो सर्वथा कहिये॥ सर्व प्रकार कर त्या
ज्यं कहिये छोड़ने योग्य है॥ अर्थ च पुनः फे
र कहिये पर निंदा कहिये है सो सर्वदा कहिये
सर्व काल विषे न कर्तव्या कहिये नहीं करनी॥
अप कहिये निश्चयक॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे
उत्तिम सत्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महा उ
त्तिम सत्यं धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार
है सो होहु॥ मूल॥ दयाधर्म हु कारन दोस निवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्जव धर्म है सो कहे चिन्मूर्ति है दर्शनज्ञान
की मूर्त है॥ और भयरहित है॥ मूल॥ तो झि
भा इज्जई संसउ हि ज्जइया विज्जइ जो अच
लपउ॥ अर्थ॥ तिस आर्जव धर्म को ध्याइये॥
और संसार छांड़िये॥ फेर आर्जव धर्म के-
ध्यानतें अचल पद है॥ सदा सास्वतो है मु
क्ति पद है॥ मूल॥ श्लोक॥ असत्यं सर्वथा त्या
ज्यं दुष्ट वाक्यं च सर्वदा॥ परनिंदा न कर्त्तव्या
भवे नापि च सर्वदा॥ १॥ अर्थ॥ भव्ये न कहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ गरुडु वियान ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो रक्षी मंडल
विषै गरुड़ विधान है ॥ मूल ॥ सच्चजि संसारसमुद्द
सउ ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो संसार समुद्र के उतारवे
को या जवंध है पुलसमान है ॥ मूल ॥ सच्चुजि भव्व हं
मरा स्वर केहेउ ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो भव्य जीवों
के मनको सुरव काररा है ॥ मूल ॥ सच्चेन जिसो हई
मरायज्जम्म ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर मनुष्य है सो से
भे हैं ॥ मूल ॥ सच्चे ना पवितउ पुरा काम असत्य
धर्म करि पुराय है सो प्रवर्त्ति होइ है ॥ मूल ॥ सच्चे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणा इहि भव पर भव सुर कय रुस च्चु जि वयणु लु
उ भुवणा ॥ अतुल्लउ। बोलिज्जइ। वीसास घरु ॥ अर्थ ॥
दया धर्म को कारण दोषों को निवारण दूर करन वालो
है ॥ इस भव पर भव विषे सुख को करन वालो है ॥ तीन
लोक विषें जाके समान औरन हीं ॥ और जो विश्वास
को घर प्रतीत को मंदिर ऐसी अनेक उपमा को धरे उत्कृ
ष्ट सत्य वचन है सो भव्य जीवां कर वोलिये है ॥ मूल ॥
सच्च जिसवंह धम्मु पहाणु ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म सो
सर्व धर्म विषें प्रधान है ॥ मूल ॥ सच्चु ज्ज महियलु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ है सो पालिये है ॥मूल॥ जंखन फिट्टइ संसार

क्षत ॥ अर्थ॥ जिनतीनों गुणके पालेतें संसार

संबंधी पीड़ा होसो एक छनमें दूर होइ है ॥ घ

तामूल॥ सच्चु सधर्म फलेन केवल नानलहे

इजन ॥ अर्थ॥ सत्यधर्म को फलकर भव्य सम्म

ह है सो केवलज्ञान है ताहि प्राप्त होइ है ॥मूल॥

तं पालहि भोम द्रव्य ॥ भरा हुम ॥ आलिय उ

इहबधरा ॥ अर्थ॥ भो भव्य जीवहो॥ ऐसो स

त्यधर्म है ताहि पालहु॥ और इस मनुष्य जन्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

नस पल गुरा गरा सक्षंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर
सकल गुरा के समूह सोहे है ॥ एक ठे होय हैं सत्य
वादी पुरुष विषें आपय रहे हैं ॥ मूल ॥ सच्चे मति
य ससंवा वहंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर देव हैं ते
सेवा करें हैं ॥ मूल ॥ सच्चे न अनु ब्वई मह वया
पी ॥ सत्य धर्म कर असि ज्जई निविभास हित
रूप मर्यादा रूप वचन है सो भव्य जीवों कर नित्य
ही बोल ॥ मूल ॥ पंन्न विभासिज्जय परं दुहापि
यास ॥ अर्थ ॥ पर को अहित रूप अमर्याद गुरु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५ अभंगो भिरणं गो उव उगा जु उं ॥ जरा मरण विनाश
नति जय पयासन झाइज्जउ ॥ अहि निसजु धउ ॥
अर्थ ॥ जो शोच धर्मांग भंग कर रहित हैं अखंड है ॥
फेर अंग सेती न्यारो है ॥ फेर उपयुक्त कर संयुक्त है ॥
जो जरा मरन के विनास कर समर्थ है ॥ और जो तीन
जगत विषें प्रकाश करने को समर्थ है ॥ ऐसो भवशा
स्वतो महान सौच धर्म है सो दिन रात विषें निरंतर
चिंतवन कीजिये ॥ मूल ॥ धम्म सउच्च होइ मन सुद्ध
॥ अर्थ ॥ ए मन की शुद्धता कर शौच धर्म है सो होइ है.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै झूठौ वचन है ताहि मत बोलो ॥ मूलश्लोक ॥
बाह्या भ्यंतरे णापि मनोवा ॥ काय शुद्धिभिः सु
चित्तेन सदा भाव्यं पाप भीतेः ॥ सुश्रावकै ॥ अर्थ ॥
बाह्य अभ्यंतर कर और मन वच काय की शुद्धता
कर पापतैं डरपै श्रावक हैं तिनकर सर्व विषै भलो
चित्त कर पाप रहित चित्त कर भावनो योग्य है ॥ मूल ॥
ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणो उत्तिम सौच धर्मांगाय नमः ॥ अ
र्थ ॥ ऐसो महान शौच धर्मांग के निमित्त हमारो न
मस्कार है सो होहु ॥ मूलं ॥ सउब्बु जु धम्मंगा तेज़ि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ जिन आगमके पढवेतैं शौचधर्म है सो होइहै ॥मू
ल॥ धम्मसउच्चसगुणअणुमणणो॥ अर्थ॥ गु
णवान पुरुषकी अनुमोदना करतैं शौच धर्म है सो
होइहै॥ मूल॥ धम्मसउच्चसल्लकयचाये॥ अर्थ॥
माया मिथ्या निदानरूप तीनसल्यके त्याग कर
सौचधर्म है सो होइहै॥ मूल॥ धम्मसउच्चजु निम
लभाए॥ अर्थ॥ निर्मल भाव होत संते शौच धर्म है
सो होय है॥ मूल॥ धम्मसउच्चकसाय अभावे॥ अर्थ॥
कषाइके अभावतें त्यागतैं शौंच धर्म है सो होइहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ मूल ॥ धम्मसउच्चयवरा धरा रोद्दरा ॥ अर्थ ॥ व
चन धन को शूद्ध ताकर शौच धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥
धम्मसउच्च लोहवज्जंतउ ॥ अर्थ ॥ लोभ के त्याग
वंत पुरुष के सौच धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ धम्मस
उच्च सतव पहिजंतउ ॥ सम्यक्त पश्चरा आचर
रा रूप मार्ग चलन वाले भव्य जीवों के शौच धर्म
है सो होइ है ॥ मूल ॥ धम्मसउच्च मपट निवाररा ॥
अर्थ ॥ आठ मद के त्यागते शौच धर्म है सो होइ
है ॥ मूल ॥ धम्मसउच्च जिरा।यम भरा।ने ॥ अर्थ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७ ओवयपासेउ॥ अर्थ॥ मुनि महाराजो को कदाका
ल विषै भी जलनरूप शौच धर्म नहीं कह्यो है॥ धत्ता
मूल॥ भव मुनि वि आनि च्चो धम्मु सउ च्चो पालिज्ज
इ॥ एयगामिनि॥ अर्थ॥ संसार को अनित्य अथिर
जानकर भो भव्य हो एकाग्रमन कर शौच धर्म है सो
पालिये॥ कैसो कहै शौच धर्म॥ मूल॥ सुह मग्ग सहा
यउ॥ अर्थ॥ शुभ मार्ग को सहाइ है॥ फेर कैसो कहै
॥ मूल॥ सिव पयदाइ॥ अर्थ॥ उमोक्ष पद को दाई
कहै॥ मूल॥ अनुमचिंतहिं किम पिरवारी॥ अर्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥मूल॥ धम्म स उज्ज नलिप्पइ पावे ॥अर्थ॥ पाप
रूपी लेप के विगर लगवे तें शौच धर्म है सो होइ वै
॥मूल॥ अहवा जिनवर पुज्ज विहारो ॥मूल॥ निम्म
ल फासू पजल कपए हारो ॥अथवा॥अर्थ॥ और
प्रकार जिनेश्वरदेवजू की पूजा विधान विषे निर्मल
प्रासुक नीर करइया सहित होइ ॥ यत्न पूर्वस्थान
करे सो भी शौचधर्म कहिये है ॥मूल॥ तपै स उज्जु
ग्रह छइं भासि उ॥अर्थ॥ सो जह शौच धर्म ग्रहस्थों
को जिनेश्वरदेव कहो हैं॥मूल॥ रा वि मुनिवर कइं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ एकेंद्री॥ तीन इंद्री॥ चौइंद्री॥ पचेंद्री॥ जीवकोरक्ष
मारूप प्राणसंयमं॥ इसभांत॥ दोई प्रकारसंयमहे
कह्यो॥ मूल पालनीयं सुचित्तेन भव्य जीवेन सर्वदा
॥ अर्थ॥ भव्यजीवेन कहिये॥ भव्यजीवहैं ताकर सु
चित्तेन कहिये॥ पुरायरूप चित्तकर पालनीय कहि
ये॥ पूर्वोक्ति दोई प्रकारसंयम पालनो योग्यहै॥ मूल
ॐह्रीं पर प्रझरो उत्तिम संयम धर्मांगाय नमः॥ अर्थ
ऐसो महान संयम धर्मांगके निमित्त हमारो नमस्का
र है सो होहु॥ मूल॥ संयम जरादुर्लहु॥ अर्थ॥ संय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भो भव्य जीव हो तुम जु हो सो शौच धर्म विना और
कबू भी चिंतवन मत करो॥ क्षण मात्र भी परंतु शौच
धर्म है॥ सोई समय समय विषैं चिंतवन करो ध्यान
स्मरण करो॥ श्लोक॥ संयमं द्वि विधं लोके क
थितं मुनि पुंगवैः॥ पालनीयं स्वचित्तेन भव्य जीवे
न सर्वदा॥१॥ अर्थ॥ मुनि पुंगव वे कहिए॥ मुनन प्रधा
न कर श्री जिनेश्वर देव कर लोक कहिए॥ इस लोक
विषैं संयम कहिये है॥ संयम है सो द्वि विधं कथितं
कहिये पांच इंद्री वसीकरण रूप इंद्री संयम और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९ पावे॥ आ— नहीं पावे॥ मूल॥ संयम पंचेंद्रिय
मनदंडनेन॥ अर्थ॥ पांच इंद्री के दंड देकर वश क
रवेतें संयम है सो होइ है॥ मूल॥ संयम जिकसाइ
विहंडणेन॥ अर्थ॥ क्रोध मान माया लोभादिक
कषायों के विषंडन कर कषाइ के छोड़ देकर सं
यम धर्म है सो होइ है॥ मूल॥ संयम दुद्धर तं वधा
रणेन॥ अर्थ॥ दुद्धरित पश्चरणा के धारवेतें संय
म धर्म सो होइ है॥ मूल॥ संयम उपवास विघं भरो
न॥ अर्थ॥ उपवासों के बढ़ाइवेतें करवे तैं सो संयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महैसो मनुष्य को अतिदुर्लभ है ॥ मूल ॥ तंपा विवि
लहु जो छंडहु ॥ पुन मूढ मइ ॥ अर्थ ॥ ऐसे दुर्लभ सं
यम को पायकर जो मूर्ख बुद्धी जीव शीघ्रही फेर छो
ड़ देय हैं मूल ॥ सो भमई ॥ भ मावलि ज्वर मरना वलो
॥ अर्थ ॥ सो जीव जरा और मरनी है ॥ पंक जा विषै
इसी भावोन् महान् पंडु है तिनही में भ्रमे है ॥ अनंत
भवों विषैं ज़य मरन करनो संतो चारोंगत विषै भट
के है ॥ मूल ॥ किम पांवइ सइ पन्नु सुगई ॥ अर्थ ॥
संयम छोड़ने वाला जीव है सो सुगति है ताह नांका फेर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वोंकी रक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संय
म सद्ध परिरक षेन ॥ अर्थ ॥ जैन शास्त्र अर्थ प
रीक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम तन
जो यन यत्तरोन ॥ अर्थ ॥ योगो के कृषि करवे कर का
य योग के वस होवे कर संयम धर्म है ॥ मूल ॥ संय
म बुह गमन चयं तरषा ॥ अर्थ ॥ बहुत गमन के त्या
ग कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम अनुकं
प कुरां तरुन ॥ अर्थ ॥ जीवों की अनु कंपा दयाकर
संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम पोसइ वंस नु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म होइ है ॥ मूल ॥ संयम मन गुपसरहु थंभ रोन
अर्थ ॥ विषय कषाई रूप होइ ॥ फेर मन के रोकवे करि
संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम सुरु काय क
लेस रुन ॥ अर्थ ॥ महत्काय क्लेश तप श्चरण क
रवे कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम परग
ह गह चाह रुन ॥ अर्थ ॥ वाह्याभ्यंतर परिग्रह रूप
पिंसाच के त्याग कर संयम धर्म है सो होइ है ॥
इंद्रिय संयम कहि अब प्राण संयम कहे हैं ॥ मूल
संयम त्रस थावर रंक रोन ॥ अर्थ ॥ त्रस थावर जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ धर्म विना एक घरी भी मत व्यतीत होहु ॥ मूल ॥
संयम विनु विहली अरु आउ ॥ अर्थ ॥ संयम ध
र्म विना आमे मुष्यायषा है सो विफल है ॥ वृत्त ॥
मूल ॥ इति भव पर भव संयम सारा ॥ अर्थ ॥ इस
भव पर भव विषें संयम धर्म है सो भव्य जीवों को
शरण है ॥ मूल ॥ होजउ जिणाणाहे ॥ अर्थ ॥ भा
निउ सो संयम धर्म सर्व जीवों को शरण होहु ॥ सो
धर्मोपि ध्वं देशरूप आशीर्वाद श्री जिनेश्वर देव
जी कर कह्यो है ॥ अथ वांर सो अतिशयवान सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हु एक्क ॥ अर्थ ॥ जुइ संयम धर्म है सो सम्यग्दर्शन
को पुव्व करे है पो षे है ॥ मूल ॥ संयम तिसहु निर मो
रक पंथ ॥ सम्यक्‌दर्शन कर राहित संयमधर्म है सो अ
तिशय कर मोक्ष को मार्ग है ॥ मूल ॥ संयम विनु नर
भव सयल सुरा ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना मनुष्य पद
है सो शून्य है निरर्थक है निष्फल है ॥ मूल ॥ संयम वि
नु दुगाय जिउ पवरा ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना कुग
ति विषें जीव है ॥ सो सखेद खिन्न होइ ॥ भटके है ॥
मूल ॥ संयमं विनु घडियं मइक्क जाउ ॥ अर्थ ॥ संयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२ अपनी शक्ति प्रमाण कर कीजिये है॥ कैसो कहें तपो
धर्म॥ बाह्याभ्यंतर दोय प्रकार है॥ अभ्यंतर छह
प्रकार बाह्य कर॥ और ऐसो बारह प्रकार है॥ मूल॥
ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे उत्तम तपो धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥
ऐसे महान उत्तम तपोधर्म रूप अंग के निमित्त हमारो
नमस्कार होहु॥ मूल॥ नरभव पावें सौं तच्च मुरे
पिणु॥ अर्थ॥ मनुष्य भव पाइकर स्वपर वस्तु [illegible]
जानकर॥ मूल॥ खंच पिपंचिं दिय समनु॥ अर्थ॥
मनसहित पांचों इन्द्रियन को वश कर खेंच कर॥ मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यम धर्म जिनेश्वर देव जू कहो है॥ ऐसो अर्थ को

जिये॥ मूल॥ दुगइस सोमन स्वर किरण॥ अर्थ

फेर संयम धर्म है॥ दुर्गति रूप सरोवर के सोषवे

को सूर्य समान है॥ मूल॥ जेन भवारि विदु मुह

निउ॥ अर्थ॥ जा संयम धर्म कर महा विष मरांभ

यानक संसार वैरी है सो हनो जाइ है॥ इनिये है॥ मू

ल श्लोक॥ द्वादशं विविधं चैव बाह्याभ्यंतर भेद

त॥ स्वयं सकमभारो न क्रियते धर्मवेदभिः॥ १॥

अर्थ॥ धर्म के जानने वाले सत्पुरुषों कर तप है सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३ नरके परिग्रह हैं ॥ १४ ॥ खेती करवो ॥ घर ॥ रूपो
सोनो ॥ चौपद ॥ बैल ॥ घोड़ा ॥ आदि धान्य नाज
॥ दासी दास ॥ १ ॥ अरगजा ॥ सुगंध ॥ वस्त्र ॥ बासन ॥ १
ए बाह्य परिग्रह ॥ १ ॥ इस भांत जो बाह्य अभ्यंतर ॥
चौवीस प्रकार परिग्रह छोड़िये ॥ सो तप धर्म कहि
ये ॥ मूल ॥ तंतउजाहिं मयरागुजिखंडिज्जइ ॥ अर्थ ॥
जहां काम को खंडिये जीतिये सो तप धर्म कहिये
॥ मूल ॥ तंत उजहिं गिरिकंदरनिवासइ ॥ अर्थ ॥
जहां गिरिकंदरा विषै आतिशय कर ॥ अथवा प्रवे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवे उपपंड विसं गई धंडुवि ॥ अर्थ ॥ संसार भोग शरीर सेती उदास भावरूप निर्वेद धर्मकर मंडित सहि न होय सो भाय मान होयकर ॥ बाह्य अभ्यंतर चौबी स प्रकार परिग्रह छोड़कर ॥ मूल ॥ तउ किज्जइं उजा स विवणु ॥ अर्थ ॥ वनविषैं जाइ कर तप धर्म है सो कीजिये ॥ मूल ॥ तंत उजह परिग्रह जं छं डिज्जई ॥ अर्थ ॥ राग ॥१॥ द्वेष ॥२॥ वेद भाव ॥१॥ मिथ्याभाव क्रोध मान ॥१॥ माया ॥१॥ लोभ ॥१॥ हास्य ॥ रति ॥ अरति ॥ शोक ॥ भय ॥ जुगुप्सा ॥१॥ ये चौदह अाभ्यं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४ नंत उ छस मिदि पर पालनु॥ अर्थ॥ जा विषै पांच
समित भले प्रकार पालिये सो तप धर्म कहिये॥ मूल॥
तंत उ गुप्ति तियहि निहालणु॥ अर्थ॥ तहां तीनों गुप्त
ते चलै नहीं नीके पालिये सो तप धर्म कहिये॥ मूल॥
तंत उ जह अधै पर बुझई॥ अर्थ॥ जहां निजात्मा को
वा पर को स्वरूप जानो सो तप धर्म कहिये॥ मूल॥ तंत
उ जिह. भउ माया जिउ भइ॥ अर्थ॥ जहां संसार विषै
संसार तें उदास होई॥ और मान कषाय छोड़िये॥ सो
तप धर्म कहिये॥ मूल॥ तंत उ जह कम्म हणु न विज्झई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शकर वसिए॥ तिष्ठियें सो तपधर्म कहिये॥ मूल॥
तंन उजिहि उपसर्ग सहिज्जइ॥ अर्थ॥ जहां उपसर्ग
को सहिये सो तपधर्म को कहिये॥ मूल॥ तंत उजह
राया उजिनिज्जई॥ अर्थ॥ जहां राग दोष मोहादिक
को जीतिए॥ तंत कहिये सो तउ कहिये तपधर्म क
हिये है॥ मूल॥ तंत उजहि भिर कहिये भुंजिज्जइ॥
अर्थ॥ तहां जैन आम्नायकर सहित योग्य परघर वि
षें भिक्षा कर आहार के समै विधि पूर्वक भोजन की
जिये॥ आहार कीजिये सो तपधर्म कहिये॥ मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ हे सो भले प्रकार प्राप्त होइ है ॥ मूल ॥ बारह विहिन्न
व वरु ॥ अर्थ ॥ बारह प्रकार श्रेष्ठ तप है ॥ मूल ॥ सो
दुगाइयहहलु ॥ अर्थ ॥ दुर्गति के नरक तिर्यंच गति
के मार्ग कों रोके हरे है ॥ मूल ॥ तं पुज्जिजइ थिरमरा
न ॥ अर्थ ॥ तिस तप धर्म को स्थिर मन कर पूजिये ॥
मूल ॥ मछर मउ छंडवि करुनाई विदंडवि ॥ अर्थ ॥
ईर्षा भाव है ताह छोड़कर इंद्री हैं तिन्हें वशीभूत
कर ॥ मूल ॥ तंपि धरिज्जइ गंवर वेरा ॥ अर्थ ॥ ऐसो
महान तप धर्म है ताह अति आदर कर धरिये ॥ मू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अर्थ ॥ जहां कर्म समूह कौ खिरबौ गिनबो होइ सोत
प धर्म कहिये ॥ मूल ॥ नंत उज्जह सुर भनपया सहि ॥ अ
र्थ ॥ जहां देव हैं ते भक्ति कर तपधान पुरुष की भक्त पूर्व
क जहां देव समूह हैं ते सेवा करें ॥ सो तप धर्म कहिए
॥ मूल ॥ पव यरा कु भावि यराहि पवासइ ॥ अर्थ ॥ ज
हां भव्य समूह कौ शास्त्र अर्थ कहिये सो तप धर्म
कहिये ॥ मूल ॥ जेरा तवे केल उपज्जइ ॥ अर्थ ॥ जात
प के प्रभाव कर केवल ज्ञान है ॥ मूल ॥ सासइ सुरकोन
च संपज्जइ ॥ अर्थ ॥ और जा तप कर सास्वंतौ सुष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ ग धर्म अंगके निमित्त हमारो नमस्कार है सो होउ
॥मूल॥ चाउवि धम्मं गो करहु अभंगो रिग यसत्ती
ए भनीएजारा हु॥अर्थ॥ भो भव्य जीव हो ते अप
नी सत्तकर भक्त पूर्वक अखंड भंग रहित त्याग
धर्म है॥मूल॥ ताह पतहं स पवित्त हा तव गुण
तयुतहं॥अर्थ॥ तप अचराकर सहित अति पवि
त्र पात्र हैं तिनके निमित्त करो॥ उत्कृष्ट पात्र के
निमित्त दान है ताह देहु॥ कैसो कहे त्याग धर्म॥
मूल॥ परिगई संवलतं मुनहु॥अर्थ॥ भो भव्यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ल॥ चतुर्विधायसंघायदानंचैवचतुर्विधं॥दा
तव्यंसर्वदासद्भिःश्चिंतकैः पारलौकिकौ॥१॥
अर्थ॥ पारलौकिकैः चिंतकैः सद्भिः कहिये पर
भव सुधारवेके चिंतक सत्पुरुषहै॥ तिनकर चतु
र्विधायसंघाय कहिये॥ चारप्रकारदानहैसो सर्व
दा कहियेसर्वकाल विषें एव कहिये निश्चयकर
दातव्यकहिये देनो योहै सो सर्वदा कहिये॥ सर्व
काल विषें देनों योग्यंहै॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणेउ
त्तिमत्यागं धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महानत्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्म करि दान दीयेतें उत्कृष्ट भोग भूमके सुख होहि
॥मूल॥ चाउ विह ऊइ गिहि जीवि रायें ॥अर्थ॥ वि
नय पूर्वक दानसंं त्याग धर्म है सो नित्य ही कीजियें
॥मूल॥ सुह वय पइ भासे विन परायें ॥अर्थ॥ फेर
शुभ मिष्ट हित मितिवचन बोलतें संतें अति नम्रीभू
त होइ करवा उत्कृष्ट पात्रके निमित्त दान दीजिये ॥मू
ल॥ अभय दान दिज्जइ ॥ पहिला ॥३॥ ॥अर्थ॥ प्रथ
मही सर्वोत्कृष्ट तें सर्व तें जे हो ॥ अभयदान है सो दी
जिये ॥मूल॥ जिमनासय परभवदु यारं ३ ॥ ॥अर्थ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्कृष्ट पात्र के निमित्त दान देवे रूप त्याग धर्म है
ताहि परभव को खरची जानो ऐसो त्याग धर्म है
॥ मूल ॥ चाए आवा गमनं इदइ ॥ अर्थ ॥ त्याग
धर्म कर संसार विषैं भ्रमण रूप आवागमन है
सो दूर होय दूर होय है ॥ मूल ॥ चाए निम्मल कित्तय
विदइ ॥ अर्थ ॥ त्याग धर्म कर निर्मल कीर्ति है ॥ मूल ॥
चाए बइरय पणमयाणं ॥ अर्थ ॥ त्याग धर्म कर
वैरी होंते पाइन परे हैं ॥ अंति नम्री भूत होहि है ॥ मूल
चाये भोह भूम सुह चाइय ॥ अर्थ ॥ फेर त्याग ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८ दानदेवाकर धन और नाना २ प्रकार भरोहैहै ते प्रवर्त्ते
है॥ मूल॥ चउ विह चाउ जिणह पविदइ॥ अर्थ॥ इभां
तचार प्रकार दानरूप चार प्रकार त्याग धर्म है सो प्रवर्त्ते
है॥ मूल॥ अह विदु दविय प्पह चाए॥ अर्थ॥ अथ
वा अशुभ विषय कषायरूप दुष्ट संकल्प विकल्प
परनाम के त्याग धर्म होइ है॥ मूल॥ चाउ विएहु सन
हु सम चाए॥ अर्थ॥ संक्षेपक थोरई से कधनकर क
हो त्याग धर्म नाहि जानो॥ घत्ता मूल॥ दुयह दिं जइदि
न॥ अर्थ॥ कर्म कर पीडित दुःखी दीन अनाथ भारी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा अभय दानके दियेते परभवके भयादिक दुः
ख हैंते नास को प्राप्ति होहि हैं ॥ मूल ॥ सद्धदानवि
ज्ज उपुराा किज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर दूसरो शास्त्रदान है
सो सुपात्र के निमित्त कीजिये ॥ मूल ॥ निर्मल नाम
जेन पाविज्जइ ॥ अर्थ ॥ जा शास्त्र के दान देवाकर नि
र्मल केवलज्ञान है ॥ मूल ॥ उसह दिज्जइ रोयविना
सनु ॥ अर्थ ॥ जा औषधी दान है वाकर कदाच का
ल विषें व्याधि के प्रकाश को हेय नहीं ॥ मूल ॥ आ
हारदंधन अरइ पवहंइ ॥ अर्थ ॥ चौथे आहार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रह भेदत:॥ तस्य संख्या प्रकर्तव्या त्यागरहित चेतसा॥१॥ अर्थ॥ बाह्याभ्यंतर भेद तेजो परिग्रह चौवीस प्रकार है॥ ता परिग्रह की मर्यादा है सो संतोषी पुरुष करनी योग्य है॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसे महान आकिंचन धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार है सो होहु॥ मूल॥ आकिंचन भावहु॥ अर्थ॥ आकिंचन धर्म है ताहि भावो॥ ध्यानरूप करो कौन तरह ध्यान मे॥ ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर कहे हैं॥ मूल॥ अप्प उ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिन्हें करुनाबुद्धि कर दान है सो दीजिये ॥ मूल ॥ वि
ज्जइ मारा ॥ अर्थ ॥ जिगुरा यरिाहं दर्शनज्ञान चा
रित्र तप ॥ गुरा के धारक सुपात्रों के सन्मान की
जिये ॥ और नित प्रसन्न नम्री भूत होइ ॥ चार प्रका
र दान है सो दीजिये ॥ मूल ॥ इय भाविय अभंगुरं स
रा चिंति जई मराहं ॥ अर्थ ॥ निरंतर सदाकाल जी
व इयाहै सो भाइए सम्यग्दर्शन है सो अपने अं
तः करण विषे ॥ निरंतर चिंतवन कीजियें ध्याइ
ये ॥ १ ॥ मूल श्लोक ॥ चतुर्विंशति संख्यो तायो परि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३० सुहसंपराउ परम ध्यातें दे उ विगय भउ ॥ पथी॥
सुखकर परिपूर्ण है॥ उत्कृष्ट है। इंद्रीगम्य नहीं
है॥ भयकर रहित है॥ सात भय में कोई भय डर
नाहीं है॥ जहां ऐसो आत्मस्वरूप ध्याइये सो नि
श्चय आकिंचन धर्म कहिये॥ मूल॥ आकिंचणु
चउसगहणीवि॥ अर्थ॥ बाह्य अभ्यंतर चौबी
स प्रकार परिग्रह को जे त्यागें सो आकिंचनुव्रत
कहियें॥ मूल॥ आकिंचनवउ वियालि पमम म
त॥ अर्थ॥ शरीरादिक विषें ममत्व को जो त्याग सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णा वउ ॥ अर्थ ॥ उस सर्व कर्म कलंक रहित निज
शुद्धात्मा है ताहि ध्यावो ॥ चिंतवन करो कैसा करे
॥ अर्थ ॥ आत्मा देहु ॥ मूल ॥ भिराहु ॥ अर्थ ॥ देह
तें न्यारो है ॥ मूल ॥ णाणा मउ ॥ अर्थ ॥ ज्ञान मयी
है ज्ञान शरीर है ॥ मूल ॥ निरुव मग यवणाउ ॥ अर्थ
ऐसो कोऊ उपमा नहीं जो आत्मा को दीजिये ॥
तातें उपमा कर रहित है ॥ फेर आत्मा है सो ॥ सुपेत
कारो, पियरो, हरो, लाल, नहीं है ॥ तातें पांच
वर्णकर रहित है ॥ फेर कैसो कहे ॥ आत्मा ॥ मूल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१ ल॥ आकिंचनुजे भवसु विरत्त॥ अर्थ॥ संसारसे
वंधी सुखसे तो जो मन विरक्त होइ नहीं लगै सो
आकिंचन धर्म जानने॥ मूल॥ तिराभित्त परिग
हु जह नह॥ अर्थ॥ जहां तीन मात्र परि ग्रह
नहीं सो आकिंचन धर्म कहिये॥ मूल॥ मनरा
उ विह ज्ज उत्तवय वह॥ अर्थ॥ मन कोराग
तप व्रत विषें कीजे॥ अथवा जहां मान करना
भाव छोड़िये॥ मन शुद्ध होय तिथियें सो आ
किंचन धर्म है॥ मूल॥ अप्पा परज्ज छोवि यर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकिंचनव्रत कहिये॥ मूल॥ आकिंचनु रयणा
त्तउ पवित्त॥ अर्थ॥ रत्नत्रयको जो धारवो प्रावृत
सो आकिंचन व्रत है॥ मूल॥ आकिंचणु आढवि
यइ चित॥ पसरंतउ॥ इंदियवण विचित्त॥ अर्थ॥
इंद्रीरूपी नाना प्रकार चित्र विचित्र वन विषै पसरते
दौरते चलते॥ चित्त को जो आकिंचन सो आकिं
चनव्रत कहिये॥ मूल॥ आकिंचनु देहहु रागु
चत्तु॥ अर्थ॥ शरीर साति स्नेह को ममत्व को मोह
को जो छोड़नो॥ सो आकिंचनव्रत कहिये॥ मू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२ भोजनको अनिष्ट जानिये भोजन सुष दाई
नहीं ॥ ऐसो विचारिये सो आकिंचन धर्म
है ॥ मूल ॥ आकिंचन धर्म जो एम होई ॥
अर्थ ॥ इस भांत आकिंचन धर्म होइ है ॥ मू
ल ॥ तं भाइ ज्झाइ निरु इछ लोइ ॥ अर्थ ॥
ऐसो महान आकिंचन धर्म है सो भव्य जी
वोंकर अतिशय कर इस लोक विषै ध्या
इये चिंतवन कीजिये ॥ मूल घत्ता ॥ एह उजि
यहाकउलद्ध महा बंह तिछै मरासि बनथर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत्त ॥ अर्थ ॥ जहां आतम स्वरूपकी अयवाप
र जीवकी स्वरूपकी विचारबे रूप शक्ति होइसो
आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ परडिज्जइ जहां पर
मेडि भति ॥ अर्थ ॥ जहां पंच परमेष्टी भक्ति प्र
गट कीजिये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ जहां
छांडिज्जइ संकराइदु ॥ अर्थ ॥ जहां अशुभ
विषय कषाय रूप मन के दुष्ट संकल्प विक
ल्प छोड़िये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥
भोजन बांछिजइ जहि अनिट ॥ अर्थ ॥ जहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३

पालनं शीलं संतोष धारिभिः॥ भेदाउभेदेन
संयुक्तं सद्गुरो प्रसादतः॥ १॥ संतोषधारीपु
रुषोंकरि सर्वकाल विषें सद्गुरुके प्रसादतें॥
भेदाभेदकरसंयुक्त शीलव्रत है ताह पालनो
योग्यहै॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परम ब्रह्मरो उत्तम ब्रह्म
चर्य धर्मांगाय नमः॥ अर्घ॥ ऐसो महान ब्रह्म
चर्य धर्मांगके निमित्त हमारो नमस्कार होहु
॥ मूल॥ ब्रह्म उडुडु रु धारिज्जइ बरू के डिज्ज
इ विसयासन रु झुडु॥ अर्थ॥ ब्रह्मचर्य व्रतहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया॥ अर्थ॥ इस आकिंचन धर्म के प्रभाव
कर॥ अपने शुद्ध आत्मीक स्वरूप को प्राप्त हो
इकर॥ तीर्थंकर देवाधिदेव होते॥ शिव नगर को
प्राप्त भया॥ मूल॥ जे पुरा रिससारा मय णवि
यारा विंद णिज्ज तेते रा सया॥ अर्थ॥ फिर परम पू
ज्य श्रेष्ठ जे ऋषीस्वर भये और होइंगे और अ
ब होते सर्व ऋषीस्वर जिन मुद्रा धारकर तिस
आकिंचनु धर्म कर संहिता होइ॥ आकिंचन व्रत धा
रहीके वंदनीक भये जगत्पूज्य भये॥ नवधा सकेहा ॥मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नि विषैं काम उपजे है॥ तिस काम कर पीडित हुओ संतो कार मूर्ष मारगी है॥ अकार्य निंद नीक कार्य करे है॥ मूल॥ तिय हंसरीरइ निंदई सेवई॥ मूल॥ रीणय पररणा रिण मढइ वेइय॥ अर्थ॥ स्त्रिया को निंद नीक महां॥ असुच शरीर को सेवे है॥ काम कर अति विहूल आतुर कार्य होयकर निज स्त्री और पर स्त्री को नहीं जाने है॥ मूल॥ इयजाणो विणू मनु वय काय॥ अर्थ॥ वंभ चेरु पातड अनुरांए॥ अर्थ॥ इस भांत नरक दुख को जान मन वचन का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो अति दुखों कर धरो जाइहै ॥ इस जगत पूज्य
ब्रह्म श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य व्रत को धारिये ॥ और विषय
कषायरूप आशा वांछा है सो अतिशय करि छो
ड़िये ॥ तिय सुख पसत उमारी कर मत उतंजी थंम्ब
हथे हुथिर ॥ अर्थ ॥ स्त्रियों के सुख विषे रक्त आसक्त
मदोन्मत्त मन हाथी है ताहि ज्ञान रूपी अंकुश कर व
शी भूतकर परम उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत है ताहि अत्यं
त थिर करो ॥ मूल ॥ चित्त भूमि मयण जिउ प्पज्जइ
॥ मूल ॥ तेण जपीडि उकर अज्जई ॥ अर्थ ॥ चित्त भू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५ जिनेश्वर देव जू कर विफल निफल कहे हैं ॥ मूल
बाहिर परसिव दियसुहरप हु ॥ मूल ॥ परम बंभ
तर पेरकहु ॥ अर्थ ॥ बाह्य स्पर्शनि इंद्री के सुख को
छोड़ो ॥ और अपने अंतःकरन विषे अनंत द
र्शनि ज्ञान सुख वीर्यमय निज आत्मरूप परब्रह्म
चर्य हे ताहि । एकाग्र दृष्टि कर देषो अवलोक
न करो ॥ भो परम ब्रह्म चर्य के धारक पुरुषोत्तम
हो ॥ मूल ॥ ए नव वारो लम्बइ सि बहत्तु ॥ मूल ॥
इमर पथ तहु भिराइ विनय सारु ॥ अर्थ ॥ इसन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य कर भो भव्य जीव हो तुम जे हो ते बड़ी प्रीति अ
नुराग कर ब्रह्मचर्य उत्तम रत्न है ताहि पालहु ॥
मूल ॥ णाव पयार इछिय सुह यारउ ॥ नव्वे विणु
वउ तउ जि असारउ ॥ अर्थ नव प्रकार स्त्री संबंधी सुख को
त्याग और व्रत तप को पालना सो और सर्व पुण्य
किया है ते ब्रह्मचर्य व्रत विना असार है अरु निः
फल है ॥ मूल ॥ ब्रह्मचर्य विनु काय कलेसई ॥
मूल ॥ विफल सफल भो सि यहि जिरा सई ॥ अ
र्थ ॥ ब्रह्मचर्य व्रत विना सफल काय क्लेश है ते भो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८ पूर्वक अंग और मस्तक नवाइ नमस्कार कीजिये है
फेर अतिशयकार इंस कालिक धर्म है सो पालिये
॥ मूल ॥ भोखेमसीह सुयभव्व विनय जुय ॥ मूल ॥
होलीवम्बइहकारइपिर ॥ अर्थ ॥ भोषेम सिंह सत
पुत्र भोभव्यभो विनय संयुक्त भो हो लि ऐसे नाम
धारक पुरुषोत्तम तुम जु हो सो जु ह उत्तम भवन
ये व्रत जु है ताहि अति दुर्लभ इस मनुष्य जन्म वि
षें ॥ अत्यंताथिरकरो ॥ अति गाढो पालो ॥ मूल ॥ इ
य काउ न निज्जरं ॥ मूल ॥ जे हरांतभव पंजरं ॥ मू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ववाड सहित सील व्रत पाले ॥ शिव मंदिर मो
क्ष मंदिर है ॥ सो ब्रह्मचारी पुरुष मोक्ष मो करपाइ
ये हैं ॥ इस प्रकार इस लक्षणीक जय माला के
कर्त्ता अति विनयवान् स्पष्ट है सो तुम विनयवा
न सत्पुरुष हो तिनको धर्मोपदेश रूप वचन कहे
हे ॥ घत्ता मूल: जिणणाह मणि जइ मुणि पण
विजई ॥ मूल ॥ इह लर कणु पालि जइ ॥ अर्थ ॥
जिन नाथ जो है तिन्हें राजेंद्र ॥ निग्रंथ मुनि मह
राजों के मन वचन काय कर नमोस्तु ऐसे विध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७ मूल॥ रवमरवमाउ॥ तूतुंगयदेहउ॥ मूल॥ मद्दवपल्ल
व अज्जवसाहउ॥ अर्थ॥ कैसोकहे धर्मरूपी रत्नक्षमा
कीजें पांके सो है॥ उचौ शरीर जाकोइ ऐसो है॥ फेर कै
सोकहे॥ धर्मरत्न मार्दव धर्मरूपी पल्लवहै॥ कूपलों
है जाके॥ ऐसो है॥ आर्जव धर्म रूपी बड़ी२ साखाहै
॥ बड़े२ डालीहै जाके ऐसो है॥ मूल॥ सच्च सउच्च मूल
सयमदलु॥ मूल॥ दुविह महा तवनव कुसमा वल
॥ अर्थ॥ फेर कैसो है धर्मरत्न सत्यधर्म और शौच
धर्म है मूल जाको॥ ऐसो है॥ फेर इंद्रीसंयम और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ई॥ इस भांत कर्मो की निर्जरा कर कर्म गाल कर
और जे पुरुषोत्तम मनुष्य जन्म विषें संसार
रूपी पिंजरा है ताइ हने है तोरे है ॥मूल॥ रोगी रो
यं अजरामरं ॥मूल॥ ते लहंति सोरंकयरं ॥अर्थ॥
ते पुरुषोत्तम रोग रहित उत्कृष्ट सुख हे ताह पा
वे है ॥मूल॥ जे रागमोरकफल्लं तं पावि ज्जइ ॥अर्थ॥
जो धर्म रत्न कर सो मोक्ष फल पाइये है ॥मूल॥
सो धम्मं गिउ एह उगीरि जई ॥अर्थ॥ सो धर्म ज्ञं
हियं धर्म रत्न सुभांत उगईए ॥ उपंजाइए ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८ पेयरसुहयफलु॥ अर्थ॥ देवेंद्र नरेंद्र खेचरेंद्र संबंधी
सुखरूप महां मीठे फल अति सुंदर लगे हैं॥ फलो केसे
कराजा के ऐसो कहे॥ उत्तमक्षमासु धर्मरूपी वृक्ष॥
मूल॥ दीननाहदीहसमारोगाह॥ अर्थ॥ दीन अनाथ
वाघ नहीं न वाधनेश्वरी उपर किरये है। निरोवर फलदे
वीरूपसमा तुल्य अनुग्रह कृपा भाव जाकर ऐसो है॥
पूर्वोक्ति धर्म रत्न सुध सोभत नमित्त परीगाढु॥ सुद्ध
समता परनाम रूप शरीर मात्र परीग्रह जाके ऐसो धर्म
रत्न॥ मूल॥ वंभचेरत्ना याहसुहासिउ॥ अर्थ॥ ब्रह्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारा संयमहै सो मोटापनो जाके ऐसो है॥ फेर कैसो
कहे धर्मरत्न॥ वाह्यवाभ्यंतर वारह भेद सहित दोय
प्रकारतप रूपी है॥ पुष्पोंकी पंक्ति जाके ऐसा है धर्म
रत्न॥ मूल॥ चउ विह चाउ पासरय परमलु॥ अर्थ॥ चा
र प्रकार जो दान सोई फूलहै पुष्पों की सुगंध जा विषें
ऐसो है धर्मरत्न॥ मूल॥ पीरोय भव्य लोय छप्पय
उलं॥ अर्थ॥ तिन पुष्पों की सुगंधकर पुष्ट करे है॥ भ
व्य लोक रूपी भ्रमर समूह कर कैसहै॥ कलकलारा-
व्द समूह जाविषें ऐसो धर्म रत्न॥ मूल॥ सुरनरषर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९ न भञ्जारउ किज्जई॥ अर्थ॥ ध्यान अनुष्ठान ध्यान-
आचररा रूप थां है लोकी जे रक्षा कोवा जल सो चवो
आस पास मो देवार की जिये॥ मूल॥ मिथ्या मय कुप
वें सुरा दिज्जई॥ अर्थ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की
प्रीत रूप वा सरीर सो आत्मा बुद्धि रूप मिथ्यात्व रूपी
मृगको हरिन को निकट आवने नहीं दीजिये॥ प्रवेश
नहीं करन दीजिये॥ मूल॥ शील शरीर धराहिं सिंच ज्ज
इ॥ अर्थ॥ सील रूप निर्मल नीर जल के धारों कर सीं
चिये॥ मूल॥ एम पयत्तइं बढारिज्जइ॥ अर्थ॥ इसय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चर्येंदपसघन कायाको है। सुं शुभा श्रय जाके ऐ
सो है धर्म रत्न॥ मूल॥ रायहंस नियरे हि समासिउ
॥ अर्थ॥ चक्रवर्त नारायरा प्रति नारायरा बलभद्र
मुकुटबंध राजा श्रोंके आदि दे बड़े २ राजा हंसो
कर लिये॥ अतिनिकट आश्रय जाको ऐसो है धर्म
रत्न॥ मूल॥ यह उद्धम रुक लिर कज्जइ॥ अर्थ॥ जु
हु धर्म रत्न है सो धर्मात्मा भव्य जीवोंकर लिखियें
जानिरें॥ मूल॥ जीवदया बहुविध रखि ज्जइ॥ अर्थ॥
जीवोंकी दया है सो बहु प्रकार राखिये॥ मूल॥ ज्ञानदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४० समिरइ ॥ अर्थ ॥ फेर शुद्ध धर्म वृक्ष है सो तीन जगत
वासी भव्यजीवोंको सो भायमान अति मीठे सदा
शाश्वतौ मुक्तरूपी फलको देइहै ॥ इति श्री दशलक्ष
णजयमालटीका संपूर्णं समाप्तं ॥ सं १९५२ मिति फा
गुन सुदी ९ शनिवार ह० नाथूराम जैनी · सागर

श्लोक ४७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

भकेरवाइ इस प्रकार करि उत्तम क्षमा रूपी सुंदर धर्म
रूपको वढाइये ॥ धत्ता ॥ कोहानल चुक्कउ ॥ अर्थ ॥
क्रोध रूपी अग्नि सेंती वचे तो होइ गुरूक्कउ ॥ अतिव
ड़ो अति गरुव होइ ॥ मूल ॥ जाई रिसिंद हि सिट्ठ ॥
अर्थ ॥ ऋषीस्वर जे सर्वकें ऋषीस्वर वीतराग अर्हंत
देव है ते इसि भांति कहे ते इस भांति कहे हैं ॥ मूल ॥ ज
गतांई सुक्करो रु ॥ मूल ॥ धम्म महातरु ॥ अर्थ ॥ शुद्ध
धर्म रूपी महा श्रेष्ट रूख है सो तीनो जगत वासी भव्य
जीवों कों सुरक कों कधावाला है ॥ मूल ॥ देइ फलाइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi